

ਚੀਕੀ ਮਿਲੋਂ ਕੇ ਲਿਏ ਪ੍ਰੀਤਾ ਰੁਕੇਗਾ ਪੇਟਿਦਾ ਸੀਜ਼ਨ !

शुगर मिलों को कर्ज देने से कतरा रहे हैं बैंक, शुगर स्टॉक में 20 लाख टन की हो सकती है कमा

अनिंद्य उपाध्याय | नई दिल्ली

चीनी के सरपास स्टॉक के कारण लोहारी मिशन में इसके दाम नहीं बढ़े हैं। हालांकि, अनेक वाले महिनों में स्टॉक में 20 लाख टन का डिफिसिट रेखने को मिलेगा, जिसकी उत्तर प्रदेश में वर्क चीनी मिलों को बढ़ावा देने के परिणाम में एक चीनी मिलों को बढ़ावा देने से माना कर रहे हैं। चैकर्स और थार इंडस्ट्री प्रिंजनकृतिव्य का कहना है कि गञ्ज सरकार की पालिसी के तहत चीनी के दाम कम होने के समय से गाने की कीमत ठंडी रखी जा रही है, जिसके कारण मिलों के लिए कामकाज व्यावहारिक नहीं रह गया है। जब भी 95 चीनी मिलों में से करीब 70 मिलों को सम्पर्कन नोटिस दिया गया है और वे आगे

का 20 लाख टन हस्ता खनन होगा, बल्कि ऊपर सीजन में और ऊपर प्रॉडक्शन में 20 लाख टन से ज्यादा की कमी भी देखने के पिलेंगी। एसवीआई ने पिछले महीने यूपू सरकार को लिखा था कि वह गश्च यूपू ने चींमी पिलो को कर्ज टेंकर लोखिया नहीं उठा सकती है। दूसरे सरकारी बैंकों ने भी यूपू इसी तरह को चिंतांग जाहिर की है।

चींमी के दाम करने होने के सबव्यभी गल्वे की कीमतों को बढ़ाया जा रहा है, जिसके कारण पिलो के लिए कामकाज व्यावहारिक नहीं रह गया है। वाले नए शुगर सीजन में बैंक चींमी पिलो को उधारी देने से दूरी बना सकते हैं। एक बड़े सरकारी बैंक के सीनियर अफिसर ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर

इकानी-कप टैक्सोल का बाल्कन, ८००-१००० में तबल्प (एनपीए) में एस्प्रिन्ग एसेट का एकार्डट नॉन-प्रफरमिंग एसेट (एनपीए) में एस्प्रिन्ग एसेट वाले हो गया है। सूखे की शुगर मिलों में एस्प्रिन्ग एसेट को नेट्रोटिक लिस्ट में सभी सारकारी बैंकों ने इन कपनियों को नेट्रोटिक लिस्ट में सभी सारकारी बैंकों ने इन कपनियों को डाल रखा है जिकर इन कपनियों का अग्रे कर्ज देने से बचेगा।

चीनी मिलों का उत्कृष्णन लगातार बढ़ रहा है, क्योंकि पिछले चार वर्षों में प्रॉडक्शन कोस्ट 70 फीसदी तक बढ़ गई है, जबकि चीनी की किनारों में केवल 8 फीसदी बढ़ाती है। यूरोप में चीनी मिलों की प्रति किलो प्रॉडक्शन कोस्ट 36-37 रुपये है, जबकि इसका रेट 28.5-29 रुपये प्रति किलो है। एक प्रमुख शुगर कंपनी के सोइओं ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बताया, ‘आगर हम 1 दिवसवार तक ऑपरेशंस शुरू नहीं करते हैं तो किसान पेशेवर हो जाएं... 1 दिवसवार के बाद कानून-व्यवस्था की स्थिति खारब हो सकती है। बड़ी संख्या में किसान आधे दम पर गुड मैन्युफ्यूचरसं को गन्ना बेचने के लिए मजबूर होते।’

ज्ञान में चीनी मिलों को कर्ज देकर जीवित नहीं उठा सकती है। दूसरे सरकारी बैंकों ने भी कुछ इसी तरह की विवारण जाहिर की है।

एक बड़े सारकारी बैंक के प्रतिक्रिया एंडस्ट्री को लेडिट और खासतार पर आंतरिक स्तर पर ‘प्रिस्ट्रिक्ट’ के लिए कारबाज व्यावहारिक नहीं रेटिंग दी गई है और खासतार पर उत्तर प्रदेश की चीनी मिलों उनकी रेटिंग दी गई है और खासतार पर नेट्रोटिक लिस्ट में है। इसका मतलब है कि अगले महीने से शुरू होने वाले नए शुगर सीजन में बैंक चीनी मिलों का उधारी देने से दूरी बना सकते हैं। एक बड़े सारकारी बैंक के सारकारी बैंकों को शर्त पर

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ ପାଠ୍ୟରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

इकानामक दैर्घ्य का बाताना, एक वर्ष में एक एकाउंट नॉन-प्रफरेंशिल कॉर्पोरेशन (एनपीए) में तब्दिल का एकाउंट नॉन-प्रफरेंशिल प्रेस्ट (एनपीप्रे) में एक्सप्रोफर रखने वाले हो गया है। यूपी की शुगर सिलों में एक्सप्रोफर रखने को नोटिव लिस्ट में सभी सरकारी बैंकों ने इन कंपनियों को डाल रखा है। इसका मतलब है कि बैंक इन कंपनियों का आगे कर्ज देने से बचेंगे।

चीनी मिलों का नुकसान लातार बढ़ रहा है, क्योंकि पिछले चार वर्षों में प्रॉडक्शन कॉर्ट 70 फीसदी तक बढ़ रही है, जबकि चीनी की कमतरों में केवल 8 फीसदी बढ़ रही है। यूपी में चीनी मिलों की प्रति किलो प्रॉडक्शन कॉर्ट 36-37 रुपये है, जबकि इसका रेट 28.5-29 रुपये प्रति किलो है। एक प्रमुख शुगर कंपनी के सीईओ ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बताया, कि अगर हम 1 दिसंबर तक ऑपरेशंस थ्रूल नहीं करते हैं तो किसान पेशान हो जाएगी... 1 दिसंबर के बाद कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है। बड़ी संख्या में किसान आधिकार दम पर गुड मैन्युफ्यूचरस को गन्ना बेचने के लिए मजबूर होती है।'

का 20 लाख टन हस्ता खनन होगा, बल्कि ऊपर सीजन में और ऊपर प्रॉडक्शन में 20 लाख टन से ज्यादा की कमी भी देखने के पिलेंगी। एसवीआई ने पिछले महीने यूपू सरकार को लिखा था कि वह गश्च यूपू ने नीचे पिलों को कर्ज ठेकर लोखिया नहीं उठा सकती है। दूसरे सरकारी बैंकों ने भी ऐसी इसी तरह की चिंताएं जाहिर की हैं।

चीनी के दाम करने होने के सबव्यभी गल्वे की कीमतों की दर्जी रख्ती जा रही है, जिसके कारण पिलों के लिए कामकाज व्यावहारिक नहीं रह गया है। वाले नए शुगर सीजन में बैंक चीनी पिलों को उधारी देने से दूरी बना सकते हैं। एक बड़े सरकारी बैंक के सीनियर अफिसर ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर

[अनिवार्य उपायाचार] बड़े दिलों
चीरी के सर पलस स्टॉक के कारण तोहरी सीजन में
इसके दाम नहीं बढ़े हैं। हालांकि, अनेक बहिर्भूतों में
स्टॉक में 20 लाख टन का डेफिसिट देखने को मिलेगा,
व्यापोक उत्तर प्रदेश में बैंक चीरी मिलों को बकिंग
कैपिटल (कामकाजी पूँजी) देने से माना कर रहे हैं।
बैंकिंग और शुगर इंडस्ट्री परियोजनाओं का कहना है
कि राज्य सरकार की पारिलासी के तहत चीनी के दाम कम
होने के समय में गन्ने की कीमतें ठंडी रखी जा रही हैं,
जिसके कारण मिलों के लिए कामकाज व्यवहारिक नहीं
रह गया है। राज्य में 95 चीरी मिलों में से करीब 70
मिलों को संप्रेषण नोटिस दिया गया है और वे अपने
महिने कामकाज शुरू नहीं कर पाएंगी।
इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के
मुताबिक, इन मिलों ने 2013-14 में 47 लाख टन चीनी
का प्रारंभकान किया था। शुगर इंडस्ट्री एसोसिएशन के
मुद्रों ने इकानीपांच टाइम्स को बताया, दिसंबर के बाद



h110118

8/10/14